ISOIS 2026

मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान द्वीपसमूह, भारत

साहित्य एवं पर्यावरण अध्ययन पर्यान्वीक्षण संस्थान

(Ecosophical Foundation for the Study of Literature and Environment- EFSLE)

एवम्

महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

के संयुक्त तत्वावधान में

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान-परम्परा के संदर्भ में द्वीपीय पारिस्थितिकी, संस्कृति, साहित्य एवम् भूगोल का विश्लेषणात्मक अध्ययन

द्वीपीय संस्कृति, साहित्य और भूगोल को भारतीय ज्ञान-परम्परा के आलोक में समझने की प्रथम पहल

ISOIS 2026

EFSLE International Seminar, Mayabunder

14–15 दिसंबर, 2026

मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, भारत

EFSLE के बारे में

EFSLE (Ecosophical Foundation for the Study of Literature and Environment) एक गैर-लाभकारी संगठन तथा अंतरराष्ट्रीय मुक्त शैक्षणिक मंच है, जो बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं, प्रकृतिवादियों, प्रकृति-प्रेमियों तथा इन मुद्दों से जुड़े और इनके प्रति गंभीर रूप से समर्पित ऐसे लोगों के बीच रचनात्मक संवाद को प्रोत्साहित करता है, जो एक-दूसरे की वैयक्तिकता और दृष्टिकोण के प्रति ग्रहणशील तथा अनुदार आग्रहों से मुक्त हों।

इसका उद्देश्य साहित्य एवं पर्यावरण के साथ दो अत्यंत प्रासंगिक मुद्दों—लिंग और मानवाधिकार—का समन्वय करना है। इस पहल की शुरुआत मुख्यतः डॉ. ऋषिकेश कुमार सिंह ने की, जिसे वे **LEGH Movement** (Literature, Environment, Gender and Human Rights—साहित्य, पर्यावरण, लिंग एवं मानवाधिकार) अर्थात् एक सामाजिक-पारिस्थितिक-साहित्यिक आंदोलन कहते हैं। यह अपनी तरह का पहला प्रयास है जिसमें इन चारों मुद्दों को एक साथ अंतर्संबंधित किया गया है। यही विशिष्टता इस आंदोलन को प्रासंगिक बनाती है।

यद्यपि 'पर्यावरण और साहित्य' हमारी मूल चिंता है, तथापि पर्यावरण में प्रमुख रूप से मानवीय पर्यावरण भी सम्मिलित है, जहाँ हम समाज के सर्वाधिक संवेदनशील और वंचित वर्गों की चिंता करते हैं। इसमें महिलाओं का सशक्तीकरण, बच्चों की समग्र उन्नति हेतु देखभाल तथा समाज के सभी वंचित वर्गों के लिए सतत आजीविका के अवसर शामिल हैं। इन सभी अध्ययन-क्षेत्रों का समन्वय करते हुए यह संगठन अपने प्रकार का विश्व का सबसे बड़ा मंच बनने की दिशा में कार्यरत है। अंतर्विषयी और बहुविषयी दृष्टिकोण इसकी आधारभूमि हैं। हमारे कार्यकारी परिषदें भारत के सभी 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों में हैं। इसके अतिरिक्त, हम विश्व के 18 देशों में कार्य कर रहे हैं तथा 7 अन्य देशों में विस्तार प्रस्तावित है।

महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर के बारे में

महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, मध्य एवं उत्तर अंडमान जिले का एकमात्र उच्च शिक्षण संस्थान है। इसका कार्यक्षेत्र और शैक्षिक सेवा-क्षेत्र दिगलीपुर के पश्चिमी सागर क्षेत्र से लेकर बाराटांग तक फैला हुआ है, जिसमें एक बड़े भू-भाग तथा बहुसंख्यक जनसंख्या का समावेश होता है। इसकी स्थापना प्रारंभ में वर्ष 1990 में कार निकोबार में हुई थी और बाद में वर्ष 1994 में इसे मायाबंदर स्थानांतरित किया गया। 34.88 एकड़ में फैला इसका उभरता हुआ परिसर पर्यावरण-अनुकूल वातावरण, मनोहारी समुद्र और अछूते वन-क्षेत्रों से घिरा है।

कर्मटांग समुद्र तट आने वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ पर्यटकों और आगंतुकों के लिए भी यह आकर्षण का केंद्र है। प्रारंभ में 100 से भी कम विद्यार्थियों से शुरू हुआ यह महाविद्यालय अब 897 विद्यार्थियों, 41 शिक्षण-कर्मियों, 30 गैर-शिक्षण कर्मचारियों और 50 से अधिक सहयोगी कर्मचारियों वाला संस्थान बन चुका है। महाविद्यालय परिसर में शिक्षण-अधिगम के लिए आवश्यक सभी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह महाविद्यालय पांडिचेरी विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

अवधारणा-नोट

भारतीय ज्ञान-परंपरा ने लंबे समय से भूमि, जल और जीवन-जगत् को पवित्र, परस्पर-संबद्ध तथा मानवेतर सत्ता से एकीभूत रूप में देखा है। इन परंपराओं में अनुष्ठान, आख्यान, ब्रह्मांड-दृष्टियाँ और संरक्षण की प्रथाएँ इस प्रकार एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं कि ये एक बहुविषयी अनुशीलन एवम् शोध का परिदृश्य निर्मित करती हैं। द्वीपीय भू-स्थल-चाहे वे नदीय बालू-द्वीप हों, तटीय द्वीपसमूह, पर्वतीय द्वीपों में स्थित पवित्र उपवन अथवा आध्यात्मिक द्वीप के रूप में अनुभव किए जाने वाले मंदिर-तालाब एवम् अन्य सभी पर्यवावरणीय अवयवों द्वारा निर्धारित की जाने वाली सन्निहित पारिस्थितिकी, लोक-अनुष्ठान, रीति एवम् सामजिक प्रथाओं और पारिस्थितिक स्मृति के अध्ययन के लिए उपयोगी सामग्री प्रदान करते हैं।

ऐसे समय में जब समुद्र-स्तर में वृद्धि, जलवायु-जनित विस्थापन और संसाधन-उत्खनन आधारित पर्यटन नाजुक तटीय एवं द्वीपीय पारिस्थितिकी के लिए खतरा बन रहे हैं, भारतीय चिंतन परम्परा के विविध रूपों - शैव, वैष्णव, बौद्ध, आदिवासी, लोक तथा क्षेत्रीय परंपराओं- का पुनर्पाठ द्वीपीय भू-स्थलों में अंत:वास और आख्यान रचने के वैकल्पिक तरीकों को उजागर कर सकता है। जलाशयों और पवित्र उपवनों से लेकर तटीय तीर्थ-परिक्रमा मार्गों तथा समुद्री पौराणिक आख्यानों तक, ये परिदृश्य पवित्रता, पारिस्थितिकी और सामुदायिक संरक्षकता के बीच जटिल अंतःक्रियाओं को व्यक्त करते हैं। साथ ही, वे स्थिरता, प्रत्यास्थता और पर्यावरणीय न्याय से संबंधित समकालीन विमर्शों के लिए ऐतिहासिक आधार भी प्रदान करते हैं।

यह EFSLE अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (ISOIS 2026) 'सन्निहित पारिस्थितिकी (Embodied Ecology)' को केवल एक रूपक के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत व्यवहार के रूप में केंद्र में रखती है- अर्थात् वे संवेदी, शारीरिक और अनुष्ठानिक सहभागिताएँ जिनके माध्यम से समुदाय द्वीपीय पर्यावरण को स्मरण करते और उसे संरक्षित रखते हैं। साथ ही, यह 'पवित्र परिदृश्यों (Sacred Landscape)' को ऐसे गतिशील और अनुसंधेय स्थलों के रूप में देखने का आह्वान करती है जहाँ आदिवासी विचार-दर्शन, राज्य की संरक्षण-व्यवस्थाएँ, ब्लू इकोनॉमी की परियोजनाएँ और जल-औपनिवेशिक इतिहास एक-दूसरे से अंतर्संबंधित होते हैं। भारतीय ज्ञान-परंपरा के माध्यम से द्वीपीय भू-स्थलों का अध्ययन कथा, गीत, तीर्थयात्रा, स्थानीय निषेध और दैनिक श्रम इत्यादि विषयों को पारिस्थितिक नैतिकता के संदर्भ में समझने का दृष्टिकोण प्रदान करता है तथा यह दृष्टिकोण महासागरों, प्रवासी समुदायों और अंतर्क्षेत्रीय नेटवर्कों को भी समझने का आधार प्रदान करता है।

इस संगोष्ठी का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा की विभिन्न विधाओं को, विशेषकर मानविकी एवम् विज्ञान के सभी विषयों को भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में द्वीपीय संस्कृति, साहित्य, पारिस्थितिकी एवम् भूगोल को बहुविषयी एवं अंतर्विषयी सन्दर्भों से जोड़ना है। ***यह इस दिशा में किया जाने वाला प्रथम प्रयास है और इसका विस्तारण प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने और जानने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।*** यह संगोष्ठी इस विषय-वस्तु पर आधारित हमारे भावी शोध परियोजना का प्रारंभिक चरण है तथा इस विषय से जुड़े सभी सारगर्भित तथ्यों, सिद्धांतों एवम् व्यावहारिक अनुभवों को सम्मिलित करते हुए चयनित सभी मौलिक शोध-पत्रों का प्रकाशन किया जाएगा।

यह एक बहुविषयी एवं अंतर्विषयी संगोष्ठी है। अतः सभी विषय-धाराओं से मौलिक शोध-पत्र आमंत्रित हैं, जो निम्नलिखित उप-विषयों से व्यापक रूप से संबंधित गंभीर मुद्दों को आत्मसात करे; हालांकि ये उप-विषय केवल इन्हीं बिन्दुओं तक सीमित नहीं हैं।

उप-विषय

1. भारतीय महाकाव्यों, पुराणों और क्षेत्रीय मौखिक परंपराओं में द्वीपीय-चिंतन।
2. भारत में पवित्र उपवन, पर्वतीय मंदिर और नदी-द्वीप : पारिस्थितिकी-आलोचनात्मक केस स्टडी।
3. विभिन्न भारतीय ग्रंथों में समाहित समुद्री एवम् द्वीपीय सन्दर्भों में पारिस्थितिकीय साहित्य और संस्कृति की व्याख्या-
    i. **'ऋग्वेद'** के **नासदीय सूक्त** तथा अर्वाचीन **ब्रह्माण्ड विज्ञान** (Cosmology) की आध्यात्मिक और भौगोलिक संकल्पनाएं और उनका द्वीपीय पारिस्थिकी एवम् भूगोल के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन
    ii. '**वाजसनेयी संहिता**' (**शुक्ल यजुर्वेद**) में समुद्री वनस्पति और जीव-जगत का सूक्ष्म संकेत
    iii. **वैदिक 'सप्त-द्वीप भूगोल'** और साहित्यिक परिदृश्य: **'सप्तद्वीप ब्रह्मांड-कल्पना'**
    iv. पुराणों, मुख्यतः **'विष्णु पुराण', 'भागवत पुराण'** और **'मार्कण्डेय पुराण'** - के सप्त-सागरों में भौतिक समुद्र-विज्ञान
    v. **'मत्स्य पुराण'** में भारतीय द्वीपीय संस्कृति एवम् भूगोल का विस्तृत उल्लेख- एक विश्लेषण
    vi. **'विनय पिटक'** और जल-तल स्थलाकृति, गर्तों तथा महाद्वीपीय शेल्फ़ के प्राचीन सर्वेक्षण: पारंपरिक बौद्ध बाथीमेट्री
    vii. **जैन परंपरा** और पौराणिक ज्वार: **'आवश्यकसूत्र'** में मिथक और समुद्री घटना
    viii. कौटिल्य के '**अर्थशास्त्र**' में तटीय नौपरिवहन और पवन-रूपों के संकेत
    ix. **'मुंडकोपनिषद्'** और '**प्रश्नोपनिषद्'** में जलीय निकायों – नदी और समुद्र के पारस्परिक संबंध की, विशेष रूप से 'समुद्री जीवन और संस्कृति' आध्यात्मिक दृष्टिकोण से विस्तृत व्याख्या
4. भारतीय महासागर के द्वीपीय साहित्य और दृश्य संस्कृतियों के अध्ययन में ब्लू ह्यूमैनिटीज़ (Blue Humanities) के दृष्टिकोण।
5. दक्षिण एशियाई लेखन में जल-औपनिवेशिक इतिहास, बंदरगाह नगर और द्वीपसमूह की स्मृति।
6. आदिवासी पारिस्थितिक-ब्रह्मांडीय दृष्टियाँ और पवित्र द्वीपीय स्थल-वन, गुफाएँ और जलप्रपात।
7. मंदिर-तालाब, बावड़ियाँ और जल-निकाय: अनुष्ठानिक द्वीप तथा पारिस्थितिकीय अवसंरचनाएँ।
8. तीर्थ-परिक्रमा मार्ग, तटीय मठ और तीर्थस्थल नेटवर्क: पवित्र समुद्री परिदृश्य।
9. भारतीय दार्शनिक अवधारणाएँ-प्रकृति, पंचमहाभूत, ऋत और धर्म-तथा द्वीपों की पारिस्थितिक नैतिकता।
10. जलवायु परिवर्तन, समुद्र-स्तर में वृद्धि और भारतीय तथा हिंद महासागर क्षेत्र के कथा-साहित्य में विस्थापन के आख्यान।
11. द्वीपीय श्रम, मत्स्य-व्यवसाय और तटीय प्रत्यास्थता के लैंगिक, दलित और आदिवासी सन्निहित अनुभव।
12. पर्यावरणीय न्यायशास्त्र, प्रकृति के अधिकार और भारतीय तथा लैटिन अमेरिकी विमर्शों में पवित्र परिदृश्य।

13. अंडमान–निकोबार, लक्षद्वीप तथा अन्य द्वीपीय क्षेत्रों की पवित्र पारिस्थितिकियों का तुलनात्मक अध्ययन।
14. द्वीपीय संदर्भों में महासागरीय शिक्षाशास्त्र, पारिस्थितिक-आध्यात्मिक आंदोलन और समुदाय-आधारित संरक्षण।
15. भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में उर्दू, फारसी एवम् अरबी द्वीपीय-समुद्री साहित्यों का अध्ययन।
16. पवित्र द्वीपीय परिदृश्यों और पारिस्थितिकीय स्मृति से जुड़े दृश्य, प्रदर्शनात्मक और डिजिटल कला-रूप।
17. भारतीय संदर्भों में द्वीपसमूह-चिंतन, भू-दर्शन और वि-औपनिवेशिक पारिस्थितिकी पर पद्धतिगत विमर्श।

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

पंजीकरण प्रारंभ: 01 जुलाई 2026

सारांश प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि: 15 सितम्बर 2026 (विस्तारित)

स्वीकृति की सूचना: सारांश प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर

यदि चयन हो जाता है, तो प्रतिभागी इसके बाद पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं।

अंतिम शोध-पत्र (प्रथम प्रारूप) प्रस्तुत करने की तिथि: 15 नवंबर 2026

निर्देश / टिप्पणियाँ

• 300 शब्दों का सारांश, 5 कीवर्ड के साथ, **md@efsle.org** पर ई-मेल करें।

• विषय-पंक्ति में "ISOIS 2026" या "Mayabunder Seminar" अवश्य लिखें।

• 12 पॉइंट Times New Roman और देवनागरी के लिए Arial Unicode MS फ़ॉन्ट का प्रयोग करें और फुटनोट से बचें।

• पूर्ण शोध-पत्र 6000–10000 शब्दों के भीतर होना चाहिए (संदर्भ-सूची और सारांश को छोड़कर)। संदर्भ-लेखन के लिए नवीनतम MLA शैली का प्रयोग करें।

• चयनित शोध-पत्र ISBN सहित संपादित पुस्तक में प्रकाशित किए जाएंगे। इन्हें संगोष्ठी कार्यवाही के रूप में नहीं, बल्कि एक पूर्ण संपादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का प्रस्ताव है; प्रस्तावित प्रकाशक Bloomsbury, USA है।

• प्रथम प्रारूपों की प्रारंभिक समीक्षा के बाद चयनित शोध-पत्रों पर प्रकाशन हेतु विचार किया जाएगा। यदि संशोधित या संपादित संस्करण आवश्यक हुआ, तो संगोष्ठी के बाद लेखकों को ई-मेल द्वारा सूचित किया जाएगा, क्योंकि प्रस्तावित खंड संगोष्ठी के पश्चात प्रकाशित किया जाना है।

• लेखकों से अनुरोध है कि वे अलग से निजवाचक शैली में लिखा हुआ 100 शब्दों से अधिक न होने वाला संक्षिप्त परिचय (bio-note) संलग्न करें।

पंजीकरण की श्रेणियाँ

• EFSLE सदस्यों और गैर-सदस्यों के लिए पंजीकरण शुल्क अलग-अलग निर्धारित है।

• EFSLE के आजीवन सदस्य जो 9–12 दिसंबर तथा 14–15 दिसंबर, दोनों आयोजनों में भाग लेना चाहते हैं, वे किसी भी प्रकार की आगे की असुविधा या भ्रम से बचने के लिए पंजीकरण से पूर्व कार्यक्रम समन्वयक से संपर्क करें।

• यह ISOIS 2026 एक सप्ताह की अवधि के Ecoscimatic Retreat Programme का हिस्सा है, जिसे शैक्षणिक आयोजनों, बौद्धिक विमर्श तथा भ्रमण एवं पर्यटन—इन सभी को एक साथ समाहित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

• पंजीकरण शुल्क का विस्तृत विवरण EFSLE की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

ISOIS 2026: International Seminar, Mayabunder, North-Middle Andaman (December 14-15, 2026)
Registration Details

Participants		Registration Fee	Accommodation Charges	Transportation Charges
Faculties/Professional & Independent Scholars	Non-members	INR 2000	INR 8000	INR 2000
	Members	*No Fee	INR 4000	INR 2000
Research Scholars	Non-members	INR 1000	INR 6000	INR 2000
	Members	*No Fee	INR 3000	INR 2000
PG Students	Non-members	No Fee	INR 4000	INR 2000
	Members	*No Fee	INR 2000	INR 2000
Foreign Nationals	Non-members	$ 200	$ 300	$ 50
	Members	*$ 100	$ 150	$ 50
Accompanying person	Indian	INR 1000	INR 2000	INR 2000
	Foreigners	$ 50	$ 150	$ 50

**Only applicable for the EFSLE lifetime Members who are participating in the ICOBH Conference. Those EFSLE who are only joining for ISOIS Seminar, need to pay as per ICOBH categories.*
***Islander (A&N Islands) PG Students are exempted from any registration fee. The registration fee for the faculties and professionals is INR 1000 (Five Hundred Only).*

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक: डॉ. चंद्र भूषण कुमार, IAS, मुख्य सचिव, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह, भारत

संरक्षक: डॉ. आर. वी. आर. मूर्ति, प्राचार्य, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

संयोजक: डॉ. सत्य प्रकाश, विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह; मोबाइल: **00-91-9531900454**

आयोजन सचिव: डॉ. बिधु भूषण मंडल, विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

सह-संयोजक: डॉ. कंडी मुथु, सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

सह-संयोजक: डॉ. ऋषिकेश कुमार सिंह, अध्यक्ष, EFSLE, नई दिल्ली; मोबाइल: **00-91-9205037771**

सह-संयोजक: डॉ. आशा तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर**,** संस्कृत विभाग**,** भारती कॉलेज**,** दिल्ली विश्वविद्यालय**;** मुख्य समन्वयक**, EFSLE,** नई दिल्ली; मोबाइल: **00-91-9212467732**

मुख्य समन्वयक: डॉ. उदय कुमार, सहायक क्षेत्रीय निदेशक, IGNOU, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

समन्वयक

• **डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल**, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय; मानद प्रबंध निदेशक, EFSLE, नई दिल्ली; मोबाइल: **00-91-9899075465**

• **डॉ. एम. सेल्वम**, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. किरण भैरन्नावर**, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, DSE, दिल्ली विश्वविद्यालय; सचिव, EFSLE, नई दिल्ली

• **डॉ. श्वेता एंटनी**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय; अतिरिक्त सचिव, EFSLE, नई दिल्ली

आयोजन समिति के सदस्य

• **डॉ. रोहित शाह**, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. यशोधरा शैलेशभाई मेहता**, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. गॉडसन बेदैया**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. प्रशांत कुमार चौधरी**, सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. अज़हरुद्दीन साहा**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर, उत्तर-मध्य अंडमान, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **प्रो. (डॉ.) सिद्धार्थ सिंह**, अंग्रेज़ी विभाग, श्री जेएनएमपीजी कॉलेज, लखनऊ; क्षेत्रीय सचिव, उत्तर-पूर्व क्षेत्र, EFSLE

• **डॉ. जोचिबेड विन्सेंट**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, अंडमान कॉलेज, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह; क्षेत्रीय सचिव, EFSLE

• **श्री बृजेश कुमार**, कार्यकारी परिषद सदस्य, EFSLE, नई दिल्ली

• **प्रो. कविता अरोड़ा**, भूगोल विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

• **डॉ. मंजुलता राव**, प्राचार्य, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **डॉ. एस. जयकुमार**, प्राचार्य, अंडमान कॉलेज (ANCOL), श्री विजय पुरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

• **प्रो. (डॉ.) हुमा याकूब**, अंग्रेज़ी विभाग, MANUU, लखनऊ

• **डॉ. रश्मि रानी आनंद**, सहायक प्रोफेसर, अफ्रीकी अध्ययन केंद्र, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)

• **डॉ. रामकिशन भिसे,** सहायक प्रोफेसर, संचार विभाग, एस आई ई एस ग्रेजुएट स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी, नवी मुम्बई

• **डॉ. भारती राय**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

• **डॉ. राज गौरव वर्मा**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

• **डॉ. साइमा मेहदी**, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, शिया कॉलेज, लखनऊ

• **श्रीमती विजया लक्ष्मी**, कोषाध्यक्ष, EFSLE, नई दिल्ली

• **डॉ. ऐश्वर्या मैंदोला**, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नई दिल्ली

लॉजिस्टिक्स एवं भ्रमण समिति

• **श्री कुमार पार्थ**, कार्यक्रम समन्वयक, EFSLE, नई दिल्ली; **9953833313**

पंजीकरण शुल्क के भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें।

EFSLE बैंक खाता विवरण के लिए:

https://www.efsle.org/efsle-account-detail/

विस्तृत जानकारी के लिए:

https://www.efsle.org/isois-2026/

"विहंगम एवम् मनोहारी द्वीपों के आकर्षण को आत्मसात् करें, जो आपका स्वागत करने को तत्पर हैं!"